

बाल संस्कार
Parenting-बच्चे को बिगाड़े नहीं

बच्चा जन्मजात निर्दोष होता है, उसे छल प्रपंच न सिखायें।

बच्चों के साथ बर्ताव में ट्रेफिक लाइट जैसा रुख रखने से फायदा

बच्चों में अच्छे संस्कार डालने, अनुशासन, जिम्मेदारी का भाव, आत्म नियंत्रण सिखाने के लिए अच्छा है कि स्पष्ट नियम हों। इसमें निम्न सावधानियां रखने लायक हैं -

१- ठोस नियम, स्पष्ट हों, कम नियम हों, स्वयं भी पालें, जल्दी-२ न बदलें। ज्यादा नियमों से भ्रमित होकर बच्चे चिडचिडे हो जाते हैं।

२- इस तरह से नियम बताएं जावे कि वह उन्हें बड़े ध्यान से सुनें ना कि तर्क-कुतर्क में पड जावें।

३- माता-पिता दोनों उस नियम पर एकमत अवश्य हों अन्यथा वह नियम बच्चे से पल न सकेगा। वरन माँ-बाप ही उस नियम पर लड़ते रहेंगे। बच्चा मजे करेगा या दोनों को वेवकूफ बनाता रहेगा।

४- बड़े बच्चों से खुलकर चर्चा करें ताकि उनका मंतव्य एवं बाहर के माहोल का पता लग जावेगा।

५- कोई भी नियम एवं दंड हो परन्तु बच्चों के इमोशनल बैंक अकाउंट में आपका प्यार जमा होता जाए।

६- कुछ नियम आज्ञा से ही मानने लायक होते हैं जिसमें धर्म एवं खानपान, बड़ों के प्रति अभिवादन के तौर तरीके इन बातों पर वहश नहीं होनी चाहियें।

७- जीवन जीने की कला, अनुकरण करने से पूर्व परीक्षा प्रधानी अवश्य होना चाहिए परन्तु बड़ों विद्वानों, अनुभवी जनों से सलाह लेकर अपनाना चाहिए। ५० वर्ष तक पारदर्शिता की बहुत जरूरत होती है। २० वर्ष तक आज्ञा मानने की सख्त आवश्यकता होती है।

सभी को ज्ञात हो कि-

रेड रूल्स - कौन-से हैं जो किसी भी कीमत पर बर्दास्त न किये जायेंगे -

उग्र व्यवहार, गाली, गंदी भाषा, नशा, आक्रामक व्यवहार, हिंसा, अन्याय पूर्ण व्यवहार।

येलो रूल्स - इस बात के लिए दंड नहीं दिया जाएगा मात्र समझाया जाएगा।- खान-पान, पहनावा, गायन नृत्य, सोना-जागना, स्वास्थ्य, रात में स्कूल बेग तैयार करना, होम वर्क करना।

ग्रीन रूल्स - बेहिचक कर सकता है। जैसे संस्कृति का पालन, मंदिर, पूजा स्वाध्याय, अच्छा साहित्य पठन, समय बद्ध लौकिक शिक्षा, दिनचर्या दान सेवा सहायता।

१- बाल -शिशु -

१- शिशु को प्रतिदिन ॐ सुनावें। उसके सामने हाथ जोड़कर सविनय भगवंतों की जय-जयकार करें।

ॐ में समस्त भगवन, गुरुजन एवं उनकी हित शिक्षा समाहित है।

मधुर भाषा में बोले, मद्य-मांस-मधु का सेवन ८ वर्ष तक न कराएं इसके बाद उसे संस्कारित कर दें वह स्वयं न करेगा ।

४५ दिन के बाद बच्चे का नाम सुंदर संक्षिप्त जैनत्व परिचायी नामकरण करें । आचार्य या भगवान के नाम पर रखे नाम को चाहे जैसे न पुकारे ।

बच्चे को नाम का मर्म बतावें , उसे उस नाम की आन रखने को प्रेरित करें । क्या कोई आपको पापियों के नाम से पुकारे तो आपको अच्छा लगेगा ? पूछते रहें ।

शिशु स्वयं सुंदर जीवंत पुस्तक है उसे पढ़ने की कौशीश करें । रोना उसकी भाषा है, उसे गौर से समझने की चेष्ट करें । उसके पालन पोषण या समझने के लिए विश्व में कोई भी सफल पुस्तक नहीं बनी है । रोने के इशारे समझने वाली सफलतम माँ बन जाती है ।

बच्चा बोलना सीखते ही स्वभाविक रोना बंद कर देता है, परन्तु दुःख का रोना वह माँ-बाप से ही सीखता है । जिससे वह एवं सम्पर्क में आने वाले सभी लोग दुखी होते हैं । साहसी बच्चे गिरकर चोट खाकर भी नहीं रोते या क्षणिक ही रोते हैं ।

बच्चा कितना भी तुतलाए परन्तु आप उसके सामने शुद्ध उच्चारण ही करें । ताकि उसे गलती का अहसास रहे और सुधरने की कौशीश करता रहे ।

सुबह शीघ्र जागने को प्रोत्साहित करें । मालिश, व्यायाम, मल-२ कर स्नान करें । बच्चे से अच्छे आचरण की अपेक्षा है तो स्वयं भी उसके सामने प्रमाणिक आचरण करो । क्योंकि बच्चा प्रतिक्षण सीखने का प्रयत्न करता रहता है । चिल्लाकर न बोले न, गाली न दें, केले फल सब्जी के छिलके यहाँ वहाँ न दें कें, जूठे- गीले हाथ पहने हुए वस्त्र से न पोंछें । जो बच्चे शर्ट से नाक पोंछते हैं तो यह पाठ उसने माँ से सीखता होगा जब वह पसीना या नाक आंचल से पोंछ लेती हैं । हाथ या थाली शर्ट से पोछना किस्से सीखा होगा अनुमान किया जा सकता है ।

आप भी विनम्रता से आवश्यक सामग्री मानगियें एवं स्नेह पूर्वक दीजीय । बालक कभी भी दूसरे से कभी कोई चीज न छिनेगा एवं स्वयं मिल बांटकर खायेगा ।

बच्चा हंसे-खेले नहीं तो समझना चाहिए कि वह बीमार है । उसे नींद आ रही है ।

बच्चे को आग एवं बिजली के सामान से दूर रखना चाहिए । चाकू, विषेली दवाएं, खुली हुई छत, धोक, खुले सेप्टिक टैंक , बोरवेळ के गड्डे से, नदी-नहरों से बचाना चाहिए । हा अपने बच्चों को समय रहते तेरना अवश्य सिखा देना चाहिए । समय अनुसार उसे चाकू, ब्लेड, बिजली, गेस सिलेंडर की सावधानी सिखाते रहना चाहिए ।

१- किशोर संस्कार -

१- निशंकित - उसे सम्पूर्ण सृष्टि पर अमित विश्वास होता है धीरे-२ धूर्त व्यवहार से शंका का पाठ सीख कर सदा के लिए शंकालु बन जाता है । निशंक बालक ही सर्प, मेंढक, अजगर को सहज भाव से छू सकता है । और आज तक किसी पशु ने उसके विश्वास को नहीं छला । परन्तु मनुष्य उसे सावधानी के नाम पर शंका करना सिखा देता है । भाभी किससे बात कर रही थी ? क्या बात कर रही थी ? क्या काम कर रही थी ? की जानकारी बच्चों से लेना, उनसे जासूसी का कार्य लेने जैसा है; इससे उनके विश्वास को ठेस पहुंचती है । धीरे-२ वह चालबाज बन जाता

है।

२- निकांछित - बच्चे को अनिवार्य आवश्यकता दूध भोजन के सिवाय कुछ नहीं चाहिए। न वह जिद करता है। पीने के बाद दूध या सामग्री को जहाँ के तहाँ छोड़ देता है। बाद के लिए जोड़कर नहीं रखना चाहता है। उसे जिद्दी हम बनाते हैं। टाफी, दूध में शकर, नमकीन, वस्त्र, फेशन, खिलोने की आदत प्रोत्साहन देकर हम सिखाते हैं। विश्व के किसी भी बच्चे ने मोबाइल। आई पोड/ TV नहीं माँगा उसकी आदत हमने ही शान पूर्वक प्रसंशा पूर्वक उसे दिया। हमने ही सिखाया और अब शिकायत करते हैं कि वो चिडचिडे हो रहे हैं गुस्सा करते हैं, सुनते नहीं हैं, मानते नहीं, जिद्दी गुस्सेल हो गये हैं।

३- निर्विचिकित्सा – बच्चे ग्लानी रहित न होते तो धूल में, मलमूत्र में भी किलकारी न मार सकते थे। हम उसके इस गुण की रक्षा करते हुए उसे स्वच्छता सिखाएं। वह जीवन भर किसी भी रोगी पशुओं की सेवा से जी न चुराएगा। ग्लानी रहित सेवा में उल्लास से दौड़ा जाएगा। माँ उसे मुंह बनाकर, चीखकर, दुर्गुण कहकर घृणा का अनुभव कराती है। यह जीवन का पहला पाठ उसे एवं आपको जीवनभर दुःख देगा।

४- अमूढदृष्टि - स्याद्वादी होते हैं, उन्हें वाक्यों का मर्म बताना नहीं पड़ता है। वह शब्द नहीं, भाव पकड़ने में सक्षम होता है। वह जन्मजात अभिप्राय को समझता है, माँ के एवं अन्य के स्पर्श के अंतर को अनुभवता है। माँ की धमकी एवं शिक्षक के उलाहने को समझता है। हंसते हुए माँ की हाथ में छड़ी देने वाला बालक; शिक्षक को छड़ी देने की बजाय भागना सही समझता है, या क्षमा मांगना। उसे पक्का विश्वास है कि माँ उसे क्षति नहीं पहुँचा सकती है। अक्षील स्पर्श एवं चुम्बन तथा माँ-बाप के प्यार को वह बखूबी समझता है। तभी तो रोकर, गाल पर हाथ फेरा कर, आँखों से घूर कर वह विरोध करता दीखता है। बोल सकता हो तो माँ से शिकायत करता है उसे कुछ अजीब सा लगा है। उसके साथ कुछ अच्छा सा नहीं हुआ है बड़े लोग उसे द्विअर्थी शब्द बोलकर चतुर बनाने के नाम पर कायर, आलसी, मक्कार बेईमान बना देते हैं।

५- अर्हिसक - बच्चा किसी को क्षति पहुँचाने की सोच भी नहीं सकता है। उसे चींटी पकड़ना नहीं आता है परन्तु वह तो उसे छूना या उठाना चाहता है। परन्तु पकड़ने की विधि ज्ञात न होने से पंजा से उठाने के चक्कर में मर जाती है। लेकिन उसी समय उसे अहसास हो जाता है कि वह उठाने के मामले में गलत है। उसे कोई सिखाने में समर्थ नहीं है। वह निरंतर वस्तु उठाना स्वयं से सीखता है। आखिर सीख ही जाता है। किसी बच्चे की आँख नाक में गलती में ऊँगली घुस जाने पर वह सहम जाता है। दूसरे बच्चे को रोते देख दुःख से भर जाता है। और स्वयं भी रोने लगता है। रोते बच्चे को देखकर हंसते हुए बच्चे को शायद ही किसी ने देखा हो। दूसरों को धक्का देकर हंसना, मारना, सताना तो वह बड़ों से बहुत बाद में सीखता है।

६- सत्यवादी- तभी तो महमान के सामने भी वह सू-सू आई कर देता है। माँ उसके सामने कपड़े बदल रही हो तो वह जोर से बोल देता है अभी मम्मी अभीहैं हंसने लगता है। यदि माँ ने कहा हो कि मामा आएंगे, तेरे लिए पैसे/ आइसक्रीम देंगे, तो मामा के आने पर वह पूछ उठता है। पैसे कब दोगे? आइसक्रीम लाये ही तो नहीं, आप तो कह रहे थे.....धैर्य से बैठकर देखता रहता है फिर माँ से पूछता है – 'अभी तक पैसे दिए ही तो नहीं', मामा से पूछता है - आप कब जाओगे? मामा पूछता है क्यों? अरे! आप जाओगे तभी तो पैसे दोगे। मैं उसी के इन्तजार में बैठा हूँ। उसके पास छुपाने को कोई भेद या बात नहीं है जो वह बड़ों से छुपाये। यही सत्यवादी की पहचान है। वह रेल में TC के सामने सहज ही अपनी उम्र मना करने-सिखाने पर भी सही बता देता है।

प्रायः माँ बाप सिखाते हैं- 'ऐसे नहीं बोलते, सबके सामने कहते शर्म नहीं आती ? यहाँ नहीं करो ? धुमाकर बोलना सीखो / अपना काम बनाना आना चाहिए / इसे वे तहजीब कहते हैं / इससे वह असत्य बोलना सीखता है।
प्रश्न - बच्चे झूठ क्यों बोलते हैं ?

समाधान – लज्जित होने, पिटने का भय, क्रोध का सामना कर पाने, देह के प्रति शर्म, गन्दा कार्य मानने से लोग या माता पिता क्या सोचेंगे, हर्ष से रोमांच फीलिंग से करना चाहते हैं और ज्ञात होते ही पेरेंट अवश्य रोक देंगे | बच्चियां ट्यूशन पर परेशान होने पर भी घरवालों को सूचित नहीं करती हैं क्योंकि वह पढाई छुड़ा देंगे | सहेलियों और मित्रों में उसकी हीनता भासित होगी |

७- अचौर्य अपरिग्रही- बच्चा स्वयं की ही काम की वस्तु सम्हाल कर नहीं रखता / कीमती खिलोने भी खेलकर जहाँ तहाँ छोड़ देता है / एकत्रित करने का रोग उसे बड़ी मुश्किल से सिखाया जाता है / दुसरे की वस्तुएं उठाना तो वह सोच भी नहीं सकता / कोई कुछ देता भी है तो वह माँ की ओर देखता है / माँ के इशारे के बिना वह कोई खाने की वस्तु भी नहीं लेता है / विना पूछे खाने का नहीं, चखकर सीखने की कोशिश अवश्य देखी जा सकती है । इस मामले में वह ज्ञान का सरल तरीका जिम्हा समझता है / वह कांटा, पेन, पत्थर भी चखकर ही देखता है । इस गुण की रक्षा करते हुए आवश्यकता की चीजे सम्हालना और दूसरों को सहजता से देने के सन्सकार डालें / हर वस्तु सही-नियत स्थान पर ही रखना सिखाएं । परन्तु अनावश्यक कोडीयाँ, पेन, कोपी, छापे, खिलोने वस्त्र दूसरों को देना भी सिखाएं / गांधीजी के अनुसार भूख से ज्यादा खाना चोरी है । बच्चा पेट भरते ही माँ का आंचल / स्तन / दूध की बोतल छोड़ देता है । कोशिश करने पर भी नहीं पीता है / कपड़े मेले होने या फटने पर भी रोते नहीं देखोगे ।

८- ब्रह्मचर्य – बच्चे जैसा पवित्र ब्रह्मचर्य बड़े-२ साधुओं में भी दिखाई नहीं देगा / उसे वस्त्र धारण न करने दिए जाएँ तो वह बड़ी उम्र तक भी सहज रूप से जी सकता है । लेकिन हम उसे छिपाना सिखाते हैं और वह जिन्दगी भर प्राकृतिक उत्तेजना, भावों, को भी छिपा कर अवसाद ग्रस्त होते देखा जा सकता है / बड़ी उम्र में भी माँ-बाप में या अपने गुरुओं से भी अपने सहज भाव छिपाता चला जाता है / वासना का सौन्दर्य न समझकर, कुंठित होकर प्रवर्तता है । व्यर्थ ही कर्म बंध को प्राप्त हो जाता है / सहजता भूलकर पर को अपराधी मानकर अपराध भाव से ग्रसित होता रहता है / बच्चा गोते में भी निर्वस्त्र सोना पसंद करता है / मच्छरों से बचने के नाम पर भी कपड़ा ओड़ने की कोशिश नहीं करता है / माँ ढंकती है और बच्चा उघड़ जाता है । ठंडों में भी टोपी खीचता-रोता दिखाई दे जाएगा । छोटी उम्र में बड़ों की विनय, सेवा में व्यस्त करने, भगवत भक्ति में लगाने में उसे काम रोग बड़े होने पर भी नहीं सताएगा / मोबाइल उसे आलसी, अविनयी एवं नियम से कामी बना देता है परिणामतयः वह रोगी होता जाता है।

९- परिश्रमी - बच्चे पढ़ने से बचना चाहते हैं, क्योंकि इसमें शारीरिक श्रम नहीं है, मानसिक श्रम है । मनुष्य को सबसे पहले शारीरिक श्रम की ही आवश्यकता होती है यह बात उससे सीखी जा सकती है । बच्चे कपड़े धोना, रोटी बनाना, सफाई करना, प्रेस करना, सारे काम करना चाहता है । उसकी टोकनी में कोई सारी वस्तुएं भर दे, तो उसे यह हेल्प अच्छी नहीं लगती है / वह स्वयं अपने हाथों से कार्य करके श्रम का आनंद लेना चाहता है । इसीलिए दूसरों के कार्य/ मदद को वह ठुकराता हुआ दिखाई देता है / एक रुमाल में एक सावुन की टिकिया खर्च करना उसके अज्ञानता

को सूचित करता है, न कि आलस या सीखने की जिज्ञासा के अभाव को / वह कुटने से कपड़ा कूटेगा फाड़ने के लिए नहीं परन्तु ज्ञान न होने से फटेगा अवश्य / अब यदि ऐसा हो जाए तो बालक डांट फटकार ताड़ना का अधिकारी नहीं है / उसे प्यार से कपड़े धोने में शामिल करने की जरूरत है अन्यथा जब वह अकेला होगा तो छिपकर प्रेस करके कपड़ा जला देगा या करेंट का शिकार हो जाएगा अच्छा हो कि उसे एक छोटी बाल्टी, मिनी ब्रुस, साबुन, झाड़ू खिलोने की तरह देवें और उससे पानी भरवावें, सफाई करावें। मोबाईल देने से तो यह लाख दर्जे अच्छा है।

१०- रस परित्यागी - तभी तो माँ के दूध के फीकेपन की और उसका ध्यान कभी नहीं गया। ककड़ी में नमक लगाकर खाना हमने सिखाया, दूध में मीठा डालना, पापड़, जीरामन, अचार का स्वाद, बाजारू पदार्थों का स्वाद हमने उसे सिखाया है।

११- अभय न यह किसी डरता है न डराता है। परन्तु हम इस भाव भंगिमा से कहानी सुनाते हैं कि वह भी डर को सीख जाता है। मम्मी रोज डराती है पापा से कह देंगे ... बाबा पकड़ ले जाएगा ... घर के अंदर आने के लिए भूत पकड़ लेगा... पुलिस आ जायेगी..... बिल्ली दूध पी जा..... इस तरह हम डरना सिखाते हैं। नहीं तो वह भूत की कहानी सुनते हुए भी हंसता मिलेगा। उससे गलतियाँ होने पर भी उसे डराएं नहीं, बल्कि उसके सत्य धर्म की रक्षा करे। अच्छा पापा से कह देना डरो नहीं, आओ हम सही तरीका सिखाए, आगे से गलती नहीं होगी, आदि कहकर होसला बढ़ाना चाहिए।

जन्मजात भय कभी न छुड़ाएं क्योंकि वह खतरों से बचने के लिए आवश्यक है। जैसे तेज लाईट में आँखें बंद करना, तेज आवाज में सहम-चोक जाना, अनजान बन से स्पर्श होने पर फूर्ती से हटना आदि। यह भय उसे आत्मरक्षा के लिए जरूरी है।

- १- समभावी - उसे छोटे-बड़े का भेद, छुआछूत का भाव सिखाया जाता है। अच्छा हो कि हम स्वयं भी बड़ों से विवेकपूर्ण व्यवहार करें तो वह भी बड़ों से अच्छा ही व्यवहार करेगा और छोटों से विनम्रता प्यार से ही बोलगा। अन्य धर्मों के प्रति भी घृणा न फैलायें। अपने परायों के बीच भेद करना कभी न सिखाएं। सभी के प्रति आदर सेवा सौजन्य अच्छे गुण इन्हें कभी नष्ट न करना चाहिए।
- २- निस्पृही - समर्पित - माँ की भाषा, दूध, वस्त्र, घर महज भाव से ग्रहण करता है। जबकि अन्य भाषा, दूध, वस्त्र, अनमने भाव से ग्रहण करता है। वह अथक सेवक है, वह कभी हमान भी नहीं जाता।
- ३- मधुर भाषी - बच्चे मधुर धीमे से बोलते हैं, परन्तु माँ-बाप के चिल्लाने की आदत से वे भी उसही का अनुकरण करते हैं। वे गाली कभी नहीं देते, परन्तु सुन-सुन कर सीख जाते हैं। लोगों से बचाया जा सकता है, माँ बाप से नहीं। गालियाँ सुनते माँ- बाप की प्रतिक्रिया बच्चे को गाली से बचा लेगी।
- ४- रोग शामक - उसकी जीवन चर्या में रोगों से लड़ने की शक्ति वृद्धिगत रहती है, लेकिन माँ-बाप कृत्रिम खानपान से उसकी रोग निरोधक क्षमता खत्म करते जाते हैं। उसे मिट्टी में खेलने दे जो उसे स्वभावतः अच्छा लगता है, पानी में घंटे भर नहाने दें, नहीं तो टब या बाल्टी के पानी में छप-२ करने दे, धूप-हवा-पानी उसकी परम मित्र हैं, यह उसे कभी रोगी न होने देंगे। रोगों की चिकित्सा से बेहतर है रोगथाम।
- ५- निर्लोभी - बच्चे पैसे एवं वस्तु के महत्व को नहीं जानते हैं। हम खुद उससे कहते हैं कि 'बताओ

घर में मम्मी अच्छी कि पापा या दादी ?' देखो मैं खीर बनाती हूँ, तुम्हें खिलोने दिलाती हूँ, तुम्हें लोरी सुनाती हूँ, पापा तो गंदे हैं तुम्हें डाटते-मारते हैं, दादी तो खांसती है, तुम्हारी मम्मी की बुराई करती है।' इत्यादि | देखो हम तुम्हारे लिए क्या लाये हैं ? गुलाब जामुन, टॉफी अब बोलो कौन अच्छा लगता है | यदि मेरा काम करोगे तो तुम्हें पैसे/ टॉफी/ मिठाई मिलेगी |

तुम अच्छे मार्क्स से पास हो जाओगे तो तुम्हें वाइक दिलायेंगे | उसकी पसंद की वस्तु से कुछ देर को शांत किया जा सकता है परन्तु वह इसका आदती हो गया तो समझ लो जुआरी ही बन गया |

हर बात को शर्त/ लाभ/ जीत/ अपने फायदे की सोचे बिना अब वह कोई काम न करेगा | आपने अनजाने ही बच्चे को गलत पाठ पढ़ा दिया या आदत डलवा दी | जब उसे खाने-पीने या वस्तु में रूचि नहीं होगी तब वह हिलने के लिए भी तैयार नहीं होगा | अच्छा होगा कि हम उसे कार्य का महत्व सिखाएं | सहयोग सौजन्य से मिलने वाली संतुष्टि आनंद का अनुभव कराएं | आप स्वयं सास ससुर की सेवा करके कितने स्वस्थ-प्रसन्न हैं, उनके आशीर्वाद से आप कितने सम्पन्न हैं | यह बात प्रतिदिन बच्चे के सुनने में आना चाहिए |

६- उदारता (दहेज न लेना, स्वयं परिश्रम से कमाना) समानता, समता, के संस्कार | बड़े होकर बड़ों को न भूले, मोह- नाती पोते के नाम की दुकान दादा चला रहे हैं | पहले ३-४ पीढ़ी तक दादा का नाम चला करता था | चिरोंजा बाई - गणेश ठगता है ठगता तो नहीं है |

७- दयालु - बच्चे स्वभाव से ही दयालु होते हैं | क्रूरता का पाठ बड़ों से ही सीखता है | तेरी ताई /दादी बड़ी खराब है | वह तो मेरी ही गोदी में रहना पसंद करता है | बच्चे को अपने पक्ष में बनाये रखने / कहने दूसरों की बुराई सिखाना जसै - कभी -२ जब पति-पत्नी में झगड़ा होता है तो वह दूसरे से बात तक नहीं करने की शिक्षा देते हैं | बच्चे घृणा से पापा को देखाता है या अनदेखा करके निकल जाता है | बच्चे किसी की भी सेवा करे तो उसकी प्रशंसा की जानी चाहिए | यह नहीं कहना चाहिए कि वे कौन लगते हैं जो तू अपना समय खराब करता है | पशुओं पक्षियों को भी वह सहेजना चाहता है उन्हें पानी पिलाना/ चारा खिलाना/ नहलाना चाहता है | गरीबों की मदद करना दीन दुखियों की सहायता करना सिखाना चाहिए | उसे अपने पराये के नाम पर स्वार्थी नहीं बनाना चाहिए | दूसरों के हित में ही हमारा हित है यह बात समझाने का मतलब है उसके द्वार पर सदा प्रसन्नता और आशीर्वाद का स्वर्ग नृत्य करेगा | दुनिया का वह प्रिय बनेगा |

दादी कैसे खांसती हैं | जरा बता तो सही और बच्चा खांसने का ऐक्शन करता है सभी ठिल-ठिलाते हैं | बच्चा समझता है वह बड़ा प्रतिभावान है | धीरे -२ वह माँत-पिता/ शिक्षक की भी हंसी उड़ाने के लिए मिमिक्री करने लगता है | परिणामतः उसकी प्रतिभा गलत रास्ता पकड़ने लगती है | वह क्रूर हो जाता है |

बच्चे को क्रूर दृश्य दिखलाना, नकली पिस्तौल बम (फटाके) दिलाना, पिचकारी के रूप में ही सही बच्चे के भावों को हिंसक बना देती है | अच्छा हो कि बच्चे को गली के गंदे बच्चों से बचाया जावे | वे उसे मोबाइल में गन्दी फिल्में देखने की लत लगा देंगे | गालियाँ सिखा देंगे | आप स्वयं उसके अच्छे मित्र बनियें आपको सन्तान का सच्चा सुख मिलेगा |

१८- आत्म निर्भरता - पर निर्भरता एवं दोषारोपण ठीक नहीं है | संस्कार डालें - सफाई, आदर, सेवा,

मेल-जोल, सभ्य भाषा, विनय, ईमानदारी के, संघर्ष के, स्नान के, निर्भयता, नाखून काटने | अनुचित वस्त्र, फ़ेशन, खानपान, कुसंग, गाली नशा, मोबाइल, विडिओ गेम पर दृढ़ता से रोकें |

८- निर्णय करने का संस्कार – बच्चा निर्णय किये बिना असमंजस में रहता है, आपकी आज्ञा पूरे मन से नहीं मानता है | वह शिशु अवस्था में माँ की गोद में आना चाहता है तो अन्य की गोद में प्यार मिलने पर भी रोता-मचलता है | यह उसकी दृढ़ता को बताता है | अच्छा हो उसे सब्जी खरीदने में, कपड़े पसंद करने में, अच्छे बुरे के निर्णय में शामिल करें | उसकी पसंद ना पसंद को तर्क से ठुकरायें, न कि दादागिरी से अन्यथा वह सारे जीवन दादागिरी ही करेगा जिसका कि जीवन भर पड़ोसी, उसकी पत्नी सन्तान के साथ -२ सर्वाधिक आपको भी भुगतना होगा |

आँख बंद करके निर्णय मानने वाले बच्चे समय आने पर किमकर्तव्य विमूढ होकर हास्य का पात्र बनकर दुखी होगा या दूसरों से ठगा जावेगा |

९- स्वच्छता का संस्कार – बच्चों को पेन्सिल की छोलन, कागज की रद्दी, पुरानी पुस्तकें काँपी सम्हालना, रखना, वस्तुओं की सम्हाल करना सिखाना चाहिए | सब्जी के छिल्के, धूल प्रथक-२ करना सिखाना चाहिए | नगर निगम की गाडी आये तो बच्चे को २ छोटी बाल्टियाँ या डस्टबिन देने चाहिए ताकि बचपन से ही सूखा-गीला कचरा अलग-२ डालने का संस्कार पड़े | इससे बड़े होने पर प्रतिष्ठापन समिति के संस्कार पड़ेंगे |

१०-सहयोग के संस्कार - ईश्वर उन्ही की मदद करता है जो स्वयं उद्यम करता है | एक व्यक्ति शत्रु से बचकर भागता हुआ मंदिर में पहुंचा | वहां के देव ने कहा – तू सामना कर, मुझे डर लगता है | तू आँख मिला | उसने कहा मेरी भय से आँखें बंद हो रही हैं | तू प्रतिमा के पीछे छिप जा | मेरे पैर नहीं चल रहे हैं | तू जहाँ है वहीं बैठ जा | मुझे डर लग रहा है | तो देवता बोला अरे अकर्मण्य तू यहाँ से निकल जा | सदा याद रखें विद्यालय, सरकारी अफसर या सरकार आपके सहयोग के बिना आपका भला नहीं कर सकती है |

११-पानी बिजली बचाएं अच्छे परोपकार के कार्यों में उदारता से व्यय करें | परन्तु आडम्बरपूर्ण प्रदर्शन से बचें |

खान पान के संस्कार -प्रिय बालकों !

धन्य हैं वे बालक जो बड़े होकर पवित्र मुनिराज बनकर अपना जीवन सार्थक करते हैं | क्या आप भी मुनिदशा प्रगट करना चाहते हो हैं तो निम्न प्रकार से भोजन का अभ्यास करो -

१२-पञ्च परमेशियों का स्मरण करते हुए अनाशक्त भाव से भोजन करें |

१३-दिन में बना एवं दिन में ही घर का बना भोजन ग्रहण करें |

१४-स्वाध्याय, परोपकार, आत्महित के लिए भोजन करें |

- १५-भोजन के समय शांत चित्त हो, शोधन करते हुए एकाग्रता पूर्वक भोजन ग्रहण करें।
- १६-अज्ञात भोजन/ फल अविश्वसनीय, असंयमी व्यक्ति के हाथ का बना भोजन न करें।
- १७-पात्रदान/ करुणा दान करें, ण हो सके तो ओरों को प्रसन्नता पूर्वक खिलाकर ही खावें।
- १८-समाचार पत्र/ पुस्तकों में पढ़कर या किसी से सुनकर औषधि भ ण लेवें। पथ्य/ अपथ्य पूर्ण कारण, लक्षण, निदान, विधि, का ज्ञान करके ही हर वार बड़ों/ विशेषज्ञों की जानकारी/ सलाह से ही दवा लेवें।
- १९-खूब चबा-२ कर खावें एवं पानी को धीमे-२ सिप करके पियें। कहावत है 'पानी खाएं भोजन पिए /'
- २०-अंत में भोजन करने वालों का ध्यान रखें। प्रिय वस्तु भी इतनी ण लेवें कि अन्य लोगों/ सदस्यों/ माँ दादी पत्नी को न बचे।
- २१-मधुर प्रिय भोजन भी अल्प मात्रा में ही खावें।
- २२-सरस नीरस आहार में प्रसन्नत पूर्वक खिलाकर खावें।
- २३-लालसा रहित युद्धता रहित भोजन ही शुद्ध भोजन है।
- २४-ऋतू अनुसार सुपाच्य भोजन ही करें।
- २५-किसी को खाते हुए लालची नजर से न देखें। मांगकर ण खावें। मेजवान के रूप, आभूषण, घर, महल को न निहारें। शिशु माँ को क्षति पहुंचाएं बिना दुग्धपान करता है।
- २६-इससे बड़े होने पर एषणा समिति के संस्कार पड़ेंगे।
- २७-अच्छे पड़ोसी बनो आपको अच्छे पड़ोसी मिलेंगे।
- २८-हम सुधरेंगे आदर्श बनेंगे।
- २९-देवत्व साध्य है परन्तु मानवता साधन है। कम अच्छे गुण मानवीय एवं अधिक गुण देवीय कहलाते हैं। दुर्गुणों से शेतान-हेवान बनते हैं।
- ३०-ईमानदारी सादगी त्याग जैसे गुण सवर्त्र काम आयेंगे। बेईमान डॉ/ इंजिनियर सवर्त्र गिरते एवं गिराते हैं।
- ३१-अपनी मुसीबतों के जिम्मेदार हम स्वयं है।
- २४- अच्छे स्कूल में प्रवेश कराने मात्र से श्रेष्ठ भविष्य नहीं बनता है।
- २५- बालक बीज के समान सम्हालने लायक है जो भविष्य में ग्राम, समाज, देश की उन्नति-सेवा करेंगे। बीज बोना खाद देना सींचना फसल आने पर रखवाली करना तो लाभ होता है। इसी प्रकार बच्चों के हृदय में संस्कार बोना, उन्हें कथाओं से सींचना, व्यसनो से रक्षा करना।

- २६- अपराधों का मूल अशिक्षा, नशा, जुआ ईर्ष्या है | इनके बिना जहाँ होंगे वहाँ सुखी होंगे |
- २७- विद्या प्राप्त करने के ४ अंग है १- बालक, पालक, शिक्षक एवं शिक्षा |
- २८- शिक्षा अर्थात् सोचने समझने की शक्ति विकसित करना |
- २९- मात्र कमाने में ही न लगे रहें बच्चे बिगड़ गये तो कमाई का क्या होगा |
- ३०- आतंक नहीं आत्मीयता चाहिए |
- ३३- बचपन में गोद में बालक उठाते हैं तब वे बड़े होने पर हमें उठाते हैं | हमने उन्हें नमोकार मन्त्र दिया तो वे मरते समय हमें भगवान का नाम सुनाकर समाधि में सहायक होंगे | दिया हुआ ही लोटता है |
- ३४- दूसरों को सुविधा दो आपको लोटकर सुविधाएं मिलेंगी |(कर्म सिद्धांत है)
- ३५- जमीन से पानी लेना सीखा है देना नहीं | जमीन को पानी से भरो |
- ३६- गड्डे हो तो तत्काल भर दो | पुराने जमाने में ग्रामीणों ने कच्ची सड़क बनाई तो कलेक्टर ने पक्की सड़क बनवा दी |
- ३७- हमें पुरखों से क्या मिला था और हमने सन्तान को क्या दिया ?
- ३९- हमें हरयाली मिली हम प्रदूषण दे रहे हैं बच्चों को |
- ४०- सादा जीवन मिला हमने मन वचन काय का प्रदूषण दिया |
- ४१- श्रीमान रवीन्द्र नाथ टैगोर चीन गये वहाँ किसी ने उनके चरण स्पर्श किये तो उन्होंने इनकार किया कि मैं तो महात्मा नहीं हूँ | उसने कहा हम तो प्रत्येक भारतीय को महात्मा ही मानते हैं |
- ४२- पाप छिपकर भी किया गया हो तो भी फल तो खुलकर आएगा |
- ४३- कार्य करने से पहले सोचो, भली सलाह मांगों एवं आवश्यकता पड़ने पर दो भी |
- ४५- सम्यक्त्व, भेदविज्ञान,
- ४६- सदाचार, षटावश्यक , लोक व्यवहार
- ४७- सरलता से दोषों को स्वीकार करना ,
- ४८- समाधि, सेवा-टहल- समाधि मृत्यु-महोत्सव,
युवा संस्कार -
- ५०- आदिनाथ ब्रह्मा कहलायें – असि मसि कृसि शिल्प वणिज आदि की शिक्षा दी | दिक्षोपरांत ऋषी बनने की शिक्षा दी |
- ५१- पारदर्शिता , जिम्मेदारी, प्रमाणिकता, ईमानदारी |
- ५४- अंतर सिखाएं -
- नायक के गुण – धैर्य, निडरता, साहसी, सत्यवादी, सदाचारी, कार्यकुशल, संरक्षक, संस्कृति पालक , विवेकी, अंत श्रेष्ठ, सम्माननीय |
- खलनायक के गुण - दुराचारी, वस्त्र काले, भोंहें टेढ़ी, सप्त व्यसनी, अंधवश्वासी एवं अविश्वसनीय, भयभीत, कपटी, षडयंत्री , अय्यासी, अंत बुरा |
- आज भी थोडा पाने के लिए मचलो मत थोडा पाकर उछलो मत |

युवाओं का नैतिक धन

सेवा, सौजन्य, समझ, समरसता, सहिष्णुता, संस्कार, सम्यकज्ञान, समता, स्वास्थ्य, स्वाध्याय, षट् आवश्यक, सतसंगति, संगीत, सजगता, शील, शांतता, सादगी, सुचिन्तन, सुमार्गी, सुप्रभावक, शिक्षित, श्रम, सुगर्वी, सहयोगी, संसार भीरु, सौभाग्यशाली, शासित रहना, समाधान शौधी, सहजता |

छात्र जीवन में सदा लोगों से मिलकर उनका दिल जीतकर जानने की कौशिश करो क्या वह अपने निर्णयों जैसे पढाई, नोकरी, शादी, बच्चों, लिव इन रिलेशन, तलाक, सेकंड मेरिज आदि से संतुष्ट हैं या नहीं | जीवन में ऐसे चिंतन/ प्रवृत्ति में सुख मान कर कभी न भटक सकोगे | समाचार पत्र एवं अपनों से बड़ों के अनुभव मार्ग दर्शन का लाभ लीजिये |

लड़ाई से स्ट्रेस आता है उससे बचने को सदा कर्तव्य पर ध्यान दो, अधिकार की कामना न करो, क्षमा करने का आनंद लो, अच्छे वस्त्र पहनों, लडकों से दोस्ती से बचो, अपनी प्रत्येक प्रवृत्ति की मर्यादा निश्चित करो, बड़ों एवं अपनों का दिल जीतो, गैरों का विश्वास न करो, दूसरों के प्रलोभन में न फंसो, मोबाइल चेटिंग से बचो |

मोबाइल आदि से हानियाँ

- १- पराधीनता या उतावलापन , सोचने समझने और निर्णय लेने की क्षमता का ह्रास |
- २- आँख, कान एवं मष्तिष्क सम्बन्धी भयंकर रोगों की सम्भावना |
- ३- अक्षील दृश्यों के देखने से परिणामों में विकृतियां |
- ४- प्रेम विवाह एवं अंतर्जातीय विवाह के कारण टेंशन , पारिवारिक वातावरण खराब होना , गुरुजनों को संताप, निर्लज्जता |
- ५- लुभावने विज्ञापनों के बार-२ आने से जीवन में दुष्प्रभाव , मर्यादाओं का लोप, गौरवमयी संस्कृति का ह्रास, महंगे उपकरणों , वस्त्रों , फेशन आदि के कारण बढ़ता आर्थिक बोझ |
- ६- आत्मघात की सम्भावना |
- ७- जीवन में कृत्रिम व्यस्तता, शारीरिक श्रम की कमी होने से शारीरिक क्षमता एवं आयु कम होना |
- ८- अपराधों की वृद्धि | विशेषतः अशिक्षित किशोर वर्ग फ़िल्मी स्टाइल पर आधारित अपराधों में लिप्त |
- ९- सर्वथा त्याग न हो सके तो भी तट सम्बन्धी निर्देशों का पालन करते हुए प्रयोग सीमित करें |

विवाह संस्कार - बाल विवाह प्रतीक था- ८ वर्ष में सगाई - दुर्विकल्प का त्याग , १२-१३ में विवाह - संयम से रहो, गोना होने के बाद संग रहते थे - विकृति का त्याग |

जैन युवा शिविर निर्देश

कभी हतोत्साहित न होना बड़ों के होश के मार्ग दर्शन में जोश रखों

२- पठनीय सामग्री – उद्देश्य निर्धारित हो तब निर्णय करें कि – कब, क्या, क्यों, कैसे पढ़ें ?

लौकिक	पारलौकिक	अन्य-
गवन, समाचार पत्रों के सम्पादकीय लेख, पाठकों के पत्रों, वर्ग पहेली, प्रेम चन्द्र की कहानियाँ, आधी रात की आजादी, संस्कृति के चार अध्याय /	द्रव्य गुण पर्याय की स्वतंत्रता ४ अभाव, ५ भाव, ६ लेश्या, द्रव्य, सामान्य गुण, कारक, ७ तत्व ९ पदार्थ, निमित्त उपादान, क्रमबद्ध पर्याय, नय चक्र, महापुराण, जैन धर्म की कहानियाँ, छहढाला, पुरुषार्थ सिद्धिउपाय, रत्नकरंड श्रावकाचार मोक्षमार्ग प्रकाशक, श्रेणिक चरित प्रवचन रत्नाकर, समयसार अनुशीलन, श्रावक धर्म प्रकाश, ज्ञान गोष्ठी,	जैन जागरण के अग्रदूत, मेरी जीवन गाथा, गोपालदासजी बरैया अभिनन्दन ग्रन्थ, आप कुछ भी कहो, बिदाई की वेला, इन भावों का क्या फल होगा, भ. महावीर एवं उनका सर्वोदय तीर्थ, शील मञ्जूषा, संस्कार मञ्जूषा, सुशीला उपन्यास, वीतरागता एक दृष्टी(देवेन्द्र कु नीमच), विराग सरिता, समकित सावन,

१- स्वास्थ्य – कैसे जियें ? दिनचर्या का महत्व, कम्प्यूटर से ५ वि तक तो पूर्णतयः एवं १२ तक बचने

का प्रयत्न करें / स्वामीनाथन का लिखा साहित्य पढ़ें / संपर्क करें –

डॉ राघवेन्द्र सिंह, दिव्यायन मल्हारगंज गली न. ३ इंदौर, फोन - 7869595776,

दिल्ली – मोहन गुप्ता 9810072039/27510771, भिंड – डॉ सुरेश जैन 9826646644

२- समाज – महत्व, क्यों व कैसे रहें ?

३- शिक्षा का उद्देश्य – शिक्षा, धन एवं भोजन साधन न कि साध्य /

४- आजिबिका – नोकरी / व्यवसाय

५- गृहस्थी – मर्यादाएं / उद्देश्य /

६- परिवार – आशय बुजुर्गों की छत्र छाया , धार्मिक संस्कार की नियमितता , कर्तव्य अधिकार दायित्व /

७- कर्तव्य – षटआवश्यक, निष्प्रमाद जीवन , समाधि

८- प्रभावना- पाठशाला , संगठन , प्रवचन गोष्ठी , यात्रा शिविर जुलुश

९- शील की मर्यादा – रावण की मदद न करें /

१०- निर्माण –

११- आप से अपेक्षाएं – बड़ों की समाधि कराएं, सलाह लें, सहनशीलता, संस्कृति रक्षा, स्वस्थ रहें, सतर्क, स्वाध्याय, सम्यक्त्व प्रगट करें, सदाचार, सरलता, मोहल्ला समाज, प्रदेश देश, छोटों को मार्ग दर्शन दें, साधना, अच्छी बातों को प्रोत्साहन दें, नहीं तो प्रोत्साहन करता नहीं मिलेंगे /

१२- सांस्कृतिक विरासत बड़ों से सम्हालें छोटों को सम्हालावें /

- १३- नैतिकता- जो अच्छा खेलें वहीं जीते, परिश्रमी को पुरस्कार मिले।
- १४- कर्म बंध के अवसर – खेल, व्यापार, स्त्री, भोजन, प्रतिस्पर्द्धा, दूरदर्शन।
- १५- मैत्री – विशेषता, उद्देश्य, स्तर, मर्यादा, - स्वस्थ, सुशील, शाकाहारी, वैचारिक निर्मलता एवं समानता, विचार शक्ति, निर्भय, निरपराधी, नियमित जीवन, न्यायप्रिय, दयालु, निःस्पृही, सार्थक व्यय क्षमता, विनम्र, सांस्कृतिक समझ, विपरीत लिंग से नहीं, भव भीरु, धर्मनिष्ठ, विश्यांध रहित, शांत चित्त-अव्यग्र, धीर, उदात्त, स्वाभिमानी, आर्थिक समानता, स्वाध्यायी, शीलवान, कुलवान, गुण सामान, आदतों, की समानता।
- १६- वर के गुण – रिश्ते का महत्व, नियमितता, धार्मिक समझ, स्वाध्याय शील।
कन्या को सावधानी – वर की आर्थिक स्थिति, घर का बजट, प्रत्येक नया कार्य सास ससुर से पूछकर करें, संयुक्त परिवार का महत्व, पुण्य-पाप उदय में समता, जीवन एक संघर्ष, सलाह देना, धैर्य – घर की बात बाहर न कहना, गृहीत मिथ्यात्व की समझ, आज्ञानुसार वर्तना, घर की सम्यक संस्कृति का वहन, रसोई, प्राकृतिक चिकित्सा का संन्य ज्ञान, कम्प्यूटर का ज्ञान, बैंक, डाकघर, विद्यालय का ज्ञान, सुरक्षित आजीविका, लघुता नम्रता। इतने गुण हो तो भेद विज्ञान पूर्वक सुखी रहा जा सकता है। क्योंकि कर्म का उदय एवं मोह उदयवश तीर्थकर-चक्रवर्ती भी संसार में सुखी नहीं हुए।
- १७- रचनात्मक कार्य- सार्व.स्थान मंदिर, के बोर्ड पर सदाचार, शाकाहार, प्रेरक समाचार पात्र की कटिंग लगाओ। अक्षील विज्ञापनों, फिल्मों, खडे-२ लघुशंका का विरोध, एवं सकारात्मक उपाय,
साप्ताहिक गोष्ठी, तात्विक समाजिक उत्तनार्थ,
अंडे मांसाहार की दुकाने खुलें में न लगे
शिविर – बाल संस्कार लगावें/ विद्यालय
सामूहिक पूजा पाठ प्रवचन कक्षा पाठशाला सञ्चालन
असहाय विधवा, गरीब सहयता आर्थिक- रोजगार, पुस्तकें ड्रेस, जूते, फीस, शिष्यवृत्ति, भोजन जल वितरण
प्रतिभा विकास मंच – गायन, नृत्य, लेखन, अभिनय, भषण संगठन योजना, चित्रकला
घर / दुकान पर २ x ३ का ब्लेक बोर्ड पर प्रति दिन सूक्ति लिखें
अन्याय अनीति अभक्ष्य का विश्वास न हों आकर्षण भी न हो।
दहेज विरोध, नशा विरोध निशुल्क नेत्र शिविर,
माता बहिनों बुजुर्गों की रक्षा/ परिचर्यार्थ/ दस लक्षण/ अशतान्हिका पर्व/ नैतिक शिविर/ तीर्थ यात्रा,
अमर्यादित कवी सम्मलेन/ विवाह/ सम्मलेन/ झांकी/ नृत्य नाटक से बचें
दशलक्षण, अष्टहानिका, निर्वाणोत्सव का गौरव समझे।

विवाह में सावधानी

जैन संस्कारों की सुरक्षा के लिए आदर्श विवाह में निम्न बातों का ध्यान रखें।

- १- प्रत्येक कार्यक्रम देव दर्शन, भजन-पूजन, यथा समय सामायिक – स्वाध्याय से प्रारम्भ होंगे / किसी भी प्रकार के भोंडे गीत/ गारी/ नृत्य संगीत नहीं होगा / सड़क पर स्त्रियाँ-बच्चियां नहीं नाचेंगी /
- २- जैन प्रतिकों का प्रयोग करें / मंगलाचरण शुद्ध एवं जैन आम्राय का ही लिखायें /
- ३- आचार्य मुनि भगवंतों के स्मरण एवं बड़े बुजुर्गों के स्मरण कृतज्ञता पूर्वक उन्हीं का आशीर्वाद लेकर किया जाएगा /
- ४- भांवरों में अग्नि का प्रयोग नहीं होगा /
- ५- पञ्च परमेष्ठी की साक्षी में जैन विधि से विवाह विधि सम्पन्न होगी /
- ६- निमंत्रण पत्रिका सादगी पूर्ण हो /
- ७- भोजन में अनावश्यक सामग्री बने/ बचे/ फिके नहीं / इसके लिए ३ मिष्ठान्न, २ नमकीन, सब्जी, चटनी, सलाद, दाल, पूरी, रोटी आदि कुल १५ या २१ आयटम ही बनें /
- ८- भोजन में जमीकंद लहशन प्याज द्विदल आदि का प्रयोग न हो /
- ९- भोजन दिन में बने और दिन में ही भोजन कराने की व्यवस्था हो / अच्छा ही होगा की सभी को जमीन पर बैठकर पाटे पर भोजन परोसा जाए /
- १०- पानी छानने परोसने की शुद्ध व्यवस्था हो, मसाले आदि खाद्य सामग्री शुद्ध बिनवा सुधवा कर धोकर ही प्रयोग करें / बाजार के स्वादिष्ट मसालों में लहशन प्याज आदि अन्य कितने ही अभक्ष्य पदार्थों का मिश्रण होता है /
- ११- भोजन परोसने के लिए वेटर का प्रयोग न करें / सधर्मियों को स्वयं वात्सल्य पूर्वक अपने हाथों से परोसें /
- १२- बारात ठहराने, शादी को होटल/ नॉनब्रेज होटल में कराने से बचें / गार्डन / हरे घास वाले लॉन से बचें /
- १३- वरमाला आदि में कृत्रिम फूलों या चन्दन की माला का इस्तेमाल करें /

- १४- अनावश्यक जानवरों का प्रयोग तो करें ही नहीं साथ ही जानवरों के आकार के सलाद, केक या अन्य मिठाइयाँ न बनावें।
- १५- काकटेल – अल्कोहल पार्टी न दें। आतिशबाजी से बचें। अनावश्यक विद्युत दिखावों से बचें।
- १६- दहेज लिया दिया नहीं जाएगा।
- १७- महिला संगीत के स्थान पर पारिवारिक सौहार्द का आयोजन होगा।
- १८- वर्तन मार्बल पावडर से मांजे जायेंगे।
- १९- विवाह में भारतीय जैन मर्यादा के अनुकूल वस्त्र पहन कर ही स्त्रियाँ शामिल होंगी।

विवाह मंडप में बाँधने योग्य फ्लेक्स

- १- लग्न पूजा के समय श्रीजी पूजा की अवमानना- असातना होने से वर वधु के दाम्पत्य जीवन में सदा अमंगल होते हैं। अतः लग्न पूजा के समय शांति एवं यथा योग्य समुचित विनय करें।
- २- गृहस्थ जीवन पापाचार का खुल्ला लायसेंस नहीं हैं। यह तो पवित्र मुनिदशा की तैय्यारी रूप तलहटी हैं।
- ३- अपने को हल्के से मत लो क्योंकि आत्मा ही परमात्मा बनता है। एवं अपने शरीर को भी हल्के से मत लो क्योंकि इसी शरीर से ही तीर्थकर, आचार्य एवं आर्यिका का भी जन्म होता है।
- ४- स्वस्तिर्वाचन- देव पूजा गुरु पास्ती स्वाध्याय संयम स्तपः।
दानं चेति गृहस्थानाम षट्कर्माणि दिने दिने ॥
षट आवश्यक का पालन करने वाले वर वधु का सदा अविनाशी कल्याण होता ही है।

विवाह प्रसंग में लिखी जाने वाली शब्दावली

आत्म हितार्थ समस्त उत्कृष्ट निमित्त रूप देवादि से देह तक पाकर भी मेरे प्रियतम स्वजन श्रीकी सम्प्रति महाव्रत रूप सकल संयम धारण करने की योग्यता न होने से उनका गृहस्थ जीवन में रहकर साधना करने के भाव हुए हैं तदनुसार उनका परिणय श्रमनोपासक श्रीमानकी आत्मजा सोभाग्यकांक्षिणीसे निश्चिय हुआ है।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ।

जकर वर्ग का नवप्रसूता पुत्री को आदर्श पत्र

प्रिय अगस्त,

इस दुनिया में तुम्हारा स्वागत है | मैं और तुम्हारी माँ म दोनों बहुत उत्साहित है | जब तुम्हारी बहन का जनम हुआ था तब भी हमने दुनिया के बारे में खत लिखा था | अब तुम्हारा जन्म हुआ है तुम एक ऐसी दुनिया में रहोगी जहाँ तुम्हारे बेहतर शिक्षा मिलेगी बीमारिया कम होगी , मजबूत समुदाय और बेहतर समानताएं होंगी | ऐसे में तुम हमसे बेहतर जिन्दगी विताओगी और इसमें हमारी जिम्मेदारी भी महत्व पूर्ण है | हम तुम्हारी पीढ़ी और भविष्य को लेकर बहुत आशावादी हैं दुनिया एक गंभीर जगह है | इसलिए यह जरूरी है कि तुम बाहर जाकर खेलने का वक्त निकालो | तुम जैसे-२ बड़ी होगी वैसे -२ व्यस्त होती जाओगी | उम्मीद है की तुम फूलों की खुशबू को महसूस करोगी और बकेट में मनचाही पत्तियां इकट्ठा कर सकोगी | बहन के साथ झूला झुलोगी | खुद अपनी कहानिया बनाओगी | तुम लिविंग रूम से लेकर यार्ड तक पूरे घर में तब तक दौड़ लगाओगी जब तक थक नहीं जाओगी | मैं चाहता हूँ कि तुम जमकर नींद लो | मुझे उम्मीद है तुम सोने में माहिर रहोगी | हम चाहते हैं तुम सपने में भी यह महसूस कर सको कि हम तुम्हें कितना प्यार करते हैं | और एक खाश बात ... बचपन बहुत जादू भरा होता है सिर्फ एक वआर मिलता है इसलिए तुम भविष्य की चिंता में इसे बर्बाद नहीं करना | तुम्हारे भविष्य की चिंता के लिए हम हैं न | तुम्हारी पीढ़ी के बेहतर भविष्य के बेहतर बनाने के लिए हम पूरी कौशिश करेंगे | अगस्त वे लोव यू सो मच हम इस यात्रा में तुम्हारे साथ चलने के लिए बेहद उत्साहित है | तुम्हें एक खुशहाल जिन्दगी मिले |- जकर वर्ग २८-८-१७

उधार व्यापार ण करें

उधर बेंचना खरीदना दोनों में खतरा है | उधार न चूका पाने से इतना अवसाद हो जाता है कि सारे निर्दोष परिवार को मारकर स्वयं मर जाते हैं |

१५-७-१८ को भोपाल में ६ लोगों ने आत्म हत्या की और लिखकर गये कि उनका बाजार में ७० लाख रु फंस गया | जिससे अवसाद बीमारी हो गई | बीमारी+दुकान बंद+दुकानदारों का बकाया + बदनामी+ कर्ज = मौत लिखा मिला कारणों में |दैनिक भास्कर १७-७-१८

प्रौढ संस्कार -

परिचारक निर्देश:-

- १- साधक को सर्वथा अकेला ना छोड़े | इतने समीप ही दूसरा व्यक्ति बैठा रहे कि उसके इशारे से तुरंत आ जाये | रात्रि में भी एक व्यक्ति जागता रहे |
- २- सामान्यतः भी चर्या के लिए सूक्ष्म उपयोग एवं सावधानी रखें | स्वयं ही यथा समय सहयोग करें | उसे कहना ना पड़े |
- ३- यदि कही जाना पड़े तो मात्र दूसरे से ही न कह जाए साधक को भी कह कर जाये और दूसरे व्यक्ति को अपने सामने ही प्रशिक्षित करके जाये |
- ४- भोजन पानी औषधी आदि के त्याग में शीघ्रता न करें | क्रमशः थोड़े थोड़े समय के लिए ही करायें उपरी योग्य उपचार करते रहे जिससे तीव्र वेदना भी न हो पाए और कषाय का प्रसंग भी न बने |
- ५- धर्म के और साधक के प्रतिकूल न तो वचन बोले न चेष्टा ही करें | मन में भी न विचारें क्यों कि मन के विचारों का निमित्त-नैमित्तिक रूप से प्रभाव देखने में आता है |

- 6- साधक के समीप विकथा न करें और न प्रमाद सहित अयत्नाचार प्रवृत्ति करें। स्वच्छता एवं व्यवस्था बनाये रखें।
- 7- मोह के निमित्तों से दूर ही रखें।
- 8- वैराग्य एवं भेदविज्ञान पोषक ही पाठ एवं स्वाध्याय करें। स्वर्गों या भोग श्रंगार युद्धादि के आगम प्रसंगों को ना पढ़ें। यदि सुनकर निदानादि रूप परिणाम हों गए तों समाधि नहीं हों सकेगी।

रोगी – परिचर्या

- १- रोगी से आंतरिक स्नेहपूर्ण व्यवहार करें। मृदुभाषा में अल्प बोलें।
- २- चिकित्सा एवं सेवा योग्य वैद्य के परामर्शानुसार ही करें। चाहें किसी की सलाहानुसार चाहें कुछ ना करने लगें।
- ३- आयुर्वेदिक एवं प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति को भली प्रकार समझकर सुमेल रखें। कभी कुछ काडे आदि आयुर्वेदिक अनुसार और कभी रस एवं फल प्राकृतिक अनुसार ना दें। पट्टी, ऐनिमा आदि का प्रयोग भी चिकित्सक से पूछकर ही करें। आवश्यकतानुसार ऐक्युप्रेसर चुम्बकीय पद्धतियों का अवलंबन ले लेवें।
- ४- शारीरिक एवं मानसिक विश्राम एवं संतुष्टी का विशेष ध्यान रखें।
- ५- शरीर, वस्त्र (पहनने, ओडने, बिछाने, पोछने के) को स्वच्छ एवं छोटे बडे सुविधानुसार रखें। पुराने कपडे भी धुले हुए रखे रहें। जिससे पट्टी पसीना पोछने में परेशानी एवं अपव्यय न हों।
- ६- पानी, औषधि का विशेष ध्यान रखें। बर्तन वैसे ही ना पड़े रहने दे। व्यवस्थित एवं साफ करके ही रखें।
- ७- थूकने, वमन पट्टी आदि के बर्तन कपडे अलग स्वच्छ रखें।
- ८- रोगी को अनावश्यक अकेला ना छोड़ें, उसकी परिचर्या उसके नियम संयम के अनुसार ही करें। किसी प्रकार का क्षल या प्रमाद ना करें। त्याज्य का भक्षण या ग्रहण ना करावें।
- ९- सेवा का प्रदर्शन एवं कमरे में भीड़ या विकथा ना होने दें।
- १०- -भोजन का ना आग्रह करें और ना अति। विवेक पूर्वक ही व्यवहार करें। धैर्य एवं संतुलन ना खोएं।
- ११- रोगी के औदयिक भावों एवं चेष्टाओं को सहन भी करें।
- १२- व्यवस्था दूसरों पर ही ना छोड़ें और दूसरों से कहकर निश्चिन्त तों कदापि ना होवें, जानकारी अवश्य रखें।
- १३- आकुलता ना हो जावे, ऐसे छल से नियम, संयम न छुडाएं।
- १४- योग्य संबोधन एवं सेवा करें।

वृद्ध संस्कार -

क्षपक निर्देश (ग्रहस्थ समाधि साधक)

- १- प्रयोजन परक स्वाध्याय करते हुए आधि-व्याधि-उपाधियों से रहित सहज समाधि-स्वरूप शुद्धात्मा को समझना एवं बारम्बार शुद्धात्म-भावना भाएँ।
- २- परिगृह एवं पदों का त्याग कर दें।
- ३- समस्त प्रकार के लौकिक व्यवहारों से विरक्त हों।
- ४- विषयों से विरक्त होकर संयम धारण करें।
- ५- लौकिक दृष्टि वाले जीवों की संगति से दूर रहें।
- ६- साधर्मीजनों में भी सीमित चर्चा करें एवं विकथा को कदापि प्रोत्साहित ना करें।
- ७- यात्रा, दानादि संबंधी प्रशस्त विकल्पों से भी निवृत्त होकर निशल्य हो जाएँ।
- ८- सर्वत्र राग एवं बैरादि विसर्जन अनिवार्य है।
- ९- सर्व प्रकार के हस्ताक्षरों, चाबी, जानकारी से मुक्त हो जाएँ।
- १०- सामान्यतः चिर परिचितों के मध्य में ना रहें।
- ११- नियर्पक का चयन कर उसी के निर्देशन में रहें।
- १२- वस्त्र, भोजन आदि भी सीमित कर लें।
- १३- देह छूटने के समय का आयुर्वेदिक एवं ज्योतिष सम्बन्धी लक्षणों से अनुमान करते हुए विवेक पूर्वक समय सीमा सहित त्याग करते हुये परिणाम के समता का विशेष ध्यान रखें।
- १४- कोई असाध्य रोगादि होने पर भी कुशल चिकित्सकों के परामर्श अनुसार विशेष संक्लेशकारी वेदना ना हो पावे ऐसे बाह्य संयम के अनुकूल उपचारों को सहज से स्वीकार कर लें, हठ ना करें।
- १५- देह छूटने के पश्चात शीघ्र ही दाह संस्कार कर देने का स्पष्ट लिखित निर्देश दे दें। तेरहवीं आदि कुरीतियों का भी निषेध कर दें।

पारिवारिक सौहार्द्र के लिए

कषाय छोड़ें, सम्बंध नहीं।

सावधान- कर्तृत्व का अहंकार और स्वच्छन्द भोग वृत्ति ही परिवार से अलग कर देती है।

- १- प्रत्येक सदस्य को मंदिर से जोड़ें।
- २- तात्विक वातावरण बनाएं (जहाँ दीपक होता है वहाँ अन्धकार नहीं होता)।
- ३- खान-पान जिनागम के अनुकूल हो।
- ४- किसी प्रसंग में प्रतिष्ठा का पॉइंट न बनाएं।
- ५- परस्पर विश्वास रखें, और विश्वासघात कदापि न करें।
- ६- झुकाने-मनवाने का नहीं, झुकने-समझने का प्रयास करें।
- ७- गुणों की प्रसंशा एवं प्रोत्साहन अवश्य करें।
- ८- बड़ों का आदर एवं छोटों से स्नेह का ध्यान रखें।
- ९- अपनी आय की स्पष्ट जानकारी सभी सदस्यों को रहे जिससे विवेक से खर्चे हों।

- १०- अनुचित मांगों का निषेध दृढ़ता से हो, परन्तु उचित अपेक्षाओं की उपेक्षा न हो।
- ११- कार्य विभाजन विवेक पूर्वक हो, उसका पालन सावधानी पूर्वक हो।
- १२- प्रत्येक सदस्य अपने से अधिक दूसरों का ध्यान रखें।
- १३- निर्माण, व्यापार, खानपान, यात्रा, विश्राम, कार्य विभाजन, गहने, वस्त्रादि में समानता का व्यवहार रहे।
- १४- प्रत्येक प्रसंग में 'भूल मेरी ही है' इस दृष्टिकोण से विचारें एवं सहजता से स्वीकार कर लें।
- १५- किसी कार्य में छोटों की भी सलाह लें, अपने को ही सर्वोपरि न समझते रहें।
- १६- छोटे कार्यों को स्वयं करने की पहल करें, जिससे दूसरों को उस कार्य के करने में हीनता न लगे।
- १७- सहज प्राप्त सामग्री में संतोष और रहन सहन में सादगी बनाये रखें।
- १८- परिणामों की सम्हाल करें, चेतन की तुलना में अचेतन को महत्व न दें। अर्थात् धर्म से अधिक धन को महत्व न दें।
- १९- कषायों के वशीभूत होकर सम्बन्ध विच्छेद क्र लेना समस्या का समाधान नहीं है। समझ पूर्वक सुधार करना ही सच्चा उपाय है।
- २०- स्यादवाद समझने से हर विसंवाद दूर होता है।
न्याय से कमायें विवेक से खर्च करें संतोष से रहें

उज्ज्वल भविष्य के लिए अनिवार्य है

शिक्षा के साथ संस्कार

१. आत्महित पर दृष्टि रखें।
२. ऊँचा लक्ष्य बनायें और लक्ष्य को सदैव सन्मुख रखें।
३. अपनी शक्ति, बुद्धि एवं परिस्थिति को भलीभाँति समझकर अपना कार्य क्षेत्र चुनें।
४. महत्वकांक्षी न बनें, न देखा - देखी भावुक होकर कार्य करें।
५. अपने मन को भटकाएँ नहीं, देव-शास्त्र-गुरु के प्रति अनन्य श्रद्धा और निष्काम भक्ति रखें।
६. प्रतिकूलताओं का धैर्यपूर्वक सामना करें।
७. संतुलन किसी भी परिस्थिति में नहीं खोएँ, उत्तेजित न होवें, मिथ्या हठ न करें।
८. यत्नाचार पूर्वक कार्य करें, जीवों को दया पालें, दौड़ भागकर न चले, उतावलापन न करें।

९. भयभीत न रहें, किसी भी प्रसंग में झूठ न बोलें, गाली न दें, बहाने न बनायें।
१०. बिना पूछे किसी की भी वस्तु न लें, चोरी न करें।
११. गंदी (शील विरुद्ध) न बातें करें और न चेष्टाएँ।
१२. अनावश्यक वस्तुएँ इकट्ठी न करें, बिना मूल्य के दिए जाने पर भी आवश्यकता नहीं होने पर न लें।
१३. शर्त लगाकर (हार-जीत के लक्ष्य से) कोई भी कार्य न करें।
१४. मदिरा, तम्बाकू, गुटखा, बीडी, सिगरेट आदि धूम्रपान का आजीवन त्याग करें।
१५. सदैव साफ़ – स्वच्छ रहें, अपने क, पुस्तकें, अन्य सामग्री कमरा एवं परिसर व्यवस्थित रखे
/
१६. समयचक्र (दिनचर्या) का पालन करें।
१७. अपना होमवर्क प्रतिदिन करें।
१८. जल्दी-जल्दी और ज्यादा भोजन न करें।
१९. बड़ों का आदर एवं छोटों को स्नेह करें।
२०. सहन करने की आदत डालें, बात-बात में मन खराब नहीं करें। सावधान : मन खराब करने से जीवन खराब होता है।
२१. मोबाइलों से कम से कम खेलें, शारीरिक व्यायाम, खेल-कूद करें।
२२. अपनी तकलीफ को बताना सीखें।
२३. मात्र लेना ही नहीं दूसरों को देना भी सीखें।
२४. दूसरों के दोषों का पोषण न करें दूर करने का प्रयास करें, सेवा व सहयोग करें।
२५. प्रसन्न एवं निश्चित रहें।



(जन्म १ जनवरी १९४०-अवसान भाद्र सुदी-६, २०७४ तदनुसार ई.सन २७ अगस्त २०१७ की रात्रि १०-३० बजे)

साधुवाद

भये तीर्थकर से बली, तिनकी नहीं चली, मौत नहीं टली,
तो अब क्या करिए, जिस पंथ चले भगवंत वही आचारिये ॥

प्रिय इष्ट हितेषी जन,

सादर शुद्धात्म नमन,

साधर्मी ही साधर्मी के सहायक ही होते हैं / तदनुसार आप सभी ने मेरे पूज्यनीय पिताश्री अशोक कुमार जैन के देहांतर प्रसंग में हमारे परिजनों के स्थितिकरण कर हम सभी को अन्तरंग सम्बल प्रदान किया तदर्थ अनेकानेक साधुवाद संप्रेषित हैं /

इस विषम संसार में मोक्षपथ में चलते-२ आप सभी की मंगल कामनाएं अवश्य फलीभूत होंगी /

हम सभी उन्हीं के पद चिन्हों पर चलकर उनकी एवं जिन शासन की गरिमा के वाहक बन सकें, अल्पकाल में जिन गुरुओं के वचनामृत प्रसाद से भेदविज्ञान को प्राप्त हो सकें, रत्नत्रय से आलोकित हों तथा संसार भ्रमण में पिताश्री को कभी न पायें, शिवपुरी में ही हम सब का वास हो ऐसा पुरुषार्थ प्रगट हो / इसी मंगल हृदयेच्छा पूर्वक आपके अपने आत्मीय स्वजन

जोग लिखी - अजय कुमार, अमर कुमार, अविनाश कुमार, अनिरुद्ध कुमार जैन एवं समस्त शौक संतप्त परिवार 'चैतन्य सदन', खरी फाटक रोड विदिशा (म.प्र.) ४६४००१

दूरभाष - अजय जैन ९४०७२७४६ दिनांक - १ सितम्बर २०१७

निधन समय इष्ट संबंधियों को सूचनार्थ वैराग्य समाचार पत्र



वैराग्य समाचार

(जन्म १ जनवरी १९४०-अवसान भाद्र सुदी-६, २०७४ तदनुसार ई.सन २७ अगस्त २०१७ की रात्रि १०-३० बजे)

प्रिय इष्ट हितेषी जन,

सादर शुद्धात्म सत्कार स्वीकृत करें | संसार चक्र के जन्म-मरण प्रवाह में मेरे पूज्य पिताश्री अशोक कुमार जी का देह से देहांतर शांत परिणामों से हो गया है |

छत्र छाया विहीन अनुभवते इस विश्व में श्रीजिन शासन ही सदा सहाय-शरण हैं | एतद उनकी स्मृति में भाद्र वदी ३, २०७४ दिनांक ९-९-२०१७ शनिवार को प्रातः ६-३० बजे से भेदविज्ञान एवं चित्त शुद्धि हेतु १००८ श्री चन्द्रप्रभ जिनालय खरी फाटक, विदिशा स्थित पवित्र शांत जिन मुद्रा के सन्मुख श्री शान्ति विधान एवं प्रवचन का आयोजन रखा गया है |

परिणाम विशुद्धि के प्रसंग में आपकी उपस्थिति अभ्यर्थनीय है |

निवेदक - अजय कुमार, अमर कुमार, अविनाश कुमार, अनिरुद्ध कुमार जैन एवं समस्त शौक संतप्त परिवार |

विनीत - संजीव ललिता नायक ललितपुर एवं हिमांशु श्रद्धा जैन दिल्ली |

प्रतीक्षारत - प्रतीक, समर्थ, पवित्र, कु.अन्या, कु.सान्या, सिद्धान्शु

चैतन्य सदन, खरी फाटक रोड विदिशा (म.प्र.) ४६४००१

दूरभाष - अजय जैन ९४०७२७४६

दिनांक - १ सितम्बर २०१७



**जिस पंथ चले भगवंत
वही आचारिये** पू.श्री
अशोक कुमार जैन पुत्र
श्री रामलाल जैन विदिशा की स्मृति
में स्वध्यायार्थ सप्रेम भेंट | -अजय,
अमर, अविनाश जैन दिनांक १-१-
१७

दानार्थ सूची

- १- खनियाधाना नन्दीश्वर विद्यालय |
- २- मंगलायतन
- ३- सोनगढ़
- ४- चैतन्य धाम
- ५- स्मारक
- ६- बाँसवाड़ा
- ७- kota
- ८- सोनागिरी
- ९- आत्मार्थी ट्रस्ट
- १०-दीबान गंज
- ११-उदयपुर

सूतक पातक विचार

संस्कार संहिता से साभार - पंडित सनत कुमार विनोद कुमार रजवास,

ज्ञान पीठ से २०१६ में प्रकाशित

संस्कार संस्कृति के परिचायक ही नहीं, उसके नियामक भी होते हैं। संस्कार नहीं, तो संस्कृति नहीं। बात इतनी ही नहीं, संस्कृति संस्कार सम्यक नहीं तो संस्कृति भी सम्यक नहीं, बल्कि संस्कार यदि बुरे पड जाएँ, तो निश्चय मानिए कि संस्कृति भी अच्छी न हो पाएगी, इसलिए संस्कारों की सजगता समृद्ध शाली संस्कृति के लिए बहुत आवश्यक है, और जब संस्कार समृद्ध होंगे तो निश्चय मानिए कि संस्कृति भी समृद्ध होगी। कुछ लोग कहते हैं कि संस्कार बंधन बनते हैं, पर मुझे लगता है कि संस्कार बंधन नहीं होते, संस्कार तो परंपरा के पोषक ओते हैं। कई बार तो ऐसा लगता है कि संस्कार से जीवन बनता है। बनता ही नहीं वह अपने चरम लक्ष्य की पूर्ति तक पहुँचता है, इसलिए मुझे तो लगता है कि संस्कार मानवीय जीवन की आधार भूमि है। संस्कार सजग और सम्यक हों, तो निश्चय है कि जीवन की गति भी अपने चरम लक्ष्य के प्रति सजग और सम्यक होगी, बल्कि उसे पाकर ही रहेगी।

जन्म समय का अशौच सूतक और मृत्यु समय का अशौच पातक कहलाता है।

जन्म समय पीढ़ी नीचे-बालक से एवं मरण समय ऊपर से गिनी जाती है। दादाजी से पहली पीढ़ी गिनना चाहिए यदि और भी बड़ा कुल हो तो दादाजी के पिताजी से गिनना चाहिए।

विधि – देव शास्त्र गुरु का स्पर्श अभिषेक द्रव्य पुजा आरती गंधोदक पूजन के वर्तन, साधुओं की वैयावृत्ति आहार दान एवं गर्भ गृह में प्रवेश वर्जित है। इसमें भाव पूजा करने स्वाध्याय सुनने का निषेध नहीं है साधु दर्शन भी कर सकते हैं किसी से लेकर गंधोदक भी लगा सकते हैं।

गर्भवती महिला ५ वे माह से कष्ट हो तो महाकार्य न करें जैसे आहारदान, बड़े विधान आदि। स्वाध्याय पूजा प्रतिदिन कर सकते हैं।

आत्म हत्या/ हत्या (गर्भपात कराने पर भी) करने वाले को उसकी रसोई में भोजन करने वाले को ६ माह का सूतक लगता है परन्तु अलग व्यापार भोजन करने वाले भाई को मात्र १२ दिन का पातक लगेगा।

जन्म का तीसरी पीढ़ी तक १० एवं १२ दिन का सूतक पातक क्रमशः लगता है।

चौथी पीढ़ी को १० दिन पांचवी में ६ दिन छठी ४ दिन ७ वी पीढ़ी में ३ दिन ८ वी पीढ़ी में १ दिन का नवी पीढ़ी में ६ घंटा १० वी पीढ़ी स्नान मात्र।

पुत्री या रिश्तेदारों को सन्तान या मरण अपने घर में होने पर ३ दिन का सूतक पातक

गर्भपात ४ माह तक जितने माह का गर्भ हो माता को उतने दिन का पातक घर वालों को नहीं इससे ऊपर ५ या अधिक माँस का होने पर गर्भपात हो तो जितने माह का गर्भपात हो उतने दिन का माँ को एवं परिवार को १ दिन का पातक लगेगा।

मरे बालक के जन्म पर माँ को ४५ दिन परिवार को १० दिन का पातक

८ वर्ष तक के बालक का ३ पीढ़ियों तक १० दिन का ८ वर्ष से बड़ा हो तो पूरा पातक पीढ़ी कर्म से लगेगा।

माँ कहती है.....

माँ कहती थी.....

तूफानों का रुख मोड़ आना,

माँ कहती है.....

लहरों की तरफ मत आना |

माँ कहती थी.....तुम लेकर आना संगी साथी,

माँ कहती है.....सुन; घर में हल्ला मत करना |

माँ कहती थी.....मिल बाँट खाना अच्छा,

माँ कहती है..... देख ! बेटा भूखा मत रहना |

माँ कहती थी.....

लड़ने से रोको दुनिया को,

माँ कहती है.....झगडे में कभी मत पड़ना |

माँ कहती थी.....जा पूछ अपने ताऊ से,

माँ कहती है.....चुप रहना, उनसे मत कहना |

कहाँ गई वो पन्ना धायसी निडर अम्मा,

हमें क्यों बना रही हो फूल सि कोमल अम्मा |- आलोक सेठी खंडवा

परिश्रम

मजबूत होता है

सीढ़ी की तरह और...

किस्मत लचर होती है

लिफ्ट की तरह |

बंद भी हो सकती है लिफ्ट

कभी-कभी / अचानक |

पर लाख विषमता हो

सीढ़ी कभी नहीं छोड़ती

हमारा साथ |

उसी के बल पर हम पा सकते हैं

जीवन में और ऊँचाई |

- आलोक सेठी खंडवा

दशहरा

हर साल जलाया जा रहा है

पुतला एक आदमी का

जिसकी बीस आँखों ने

ग़लत निगाह से देखा था

एक नारी को |

पर उन्हें कौन जलाएगा ?

जिनकी २ आँखें

ग़लत निगाह से देखती हैं

बीसियों नारियों को |

- आलोक सेठी खंडवा

अपने

सपने तो सिर्फ सपने होते हैं

और अपने भी सिर्फ अपने होते हैं

चाहे सपनों को अपना बना लेना

पर....

कभी जीवन में अपनों को

सपना मत बनाना |

- आलोक सेठी खंडवा

मेरा साया साथ होगा

मत रो बेटे

मेरी तस्वीर के सामने

वहां नहीं हूँ मैं |

मैं तुम्हारे तपते बुखार में ठन्डे पानी की पट्टी हूँ ।
तुम्हारे आंसू पोंछता रुमाल ।
तुम्हें ठसका लगते ही पानी का ग्लास हूँ मैं ।
जब बंद दिखे सारे दरवाजे
अचानक नजर आया रास्ता हूँ मैं ।
नींद में तुम्हें ठण्ड लगते समय रजाई हूँ मैं ।
दुर्घटना में बाल-२ बचा ले गया
वह एक क्षण हूँ मैं ।
मत रो बेटे
मेरी तस्वीर के सामने
वहां नहीं हूँ मैं ।
- आलोक सेठी खंडवा
बदलते मालिक
खुशी से इठलाती लड़की
जब बनती है दुल्हन
नहीं पता होता है उसे
हरी हरी खनखनाती
यह चूड़ियां
चूड़ियां नहीं हथकड़ी हैं
और झन झन करती पायल
पांवों की बेड़ियाँ ।
ये सिंदूर , बिंदी, मंगलसूत्र
गिरवी रखने वाले हैं उसे
एक नये मालिक के पास ।
जिस घर को संवारने का
सपना लेकर जा रही है वह
वहीं उसके पास होगी

ढेर सारी जवाबदारी
पर नहीं होगा नेम प्लेट पर उसका नाम
उसकी जिन्दगी में
शादी हो जाने से
कुछ बेहतर नहीं हो जाने वाला है
पहले वह किसी से मिलने जाती थी
पिता से पूछकर
अब उसे पिता से मिलने जाना होगा
अब उसे पति से पूछकर |

- आलोक सेठी खंडवा

अवसर

भाग्यशाली वह

जो पा लेता है

कोई अवसर |

बुद्धिमान वह

जो पैदा कर लेता है

कोई अवसर |

पर सफलता तो उसी के चरण चूमती है

जो भुना लेता है

हर अवसर |

- आलोक सेठी खंडवा

माँ

माँ लगी रहती है सतत

काम खत्म होते नहीं

रात आ जाती है

नींद खत्म होती नहीं

सुबह आ जाती है ...|

- आलोक सेठी खंडवा
बेटा जा रहा है होस्टल
मठरी , लड्डू दिए हैं,
खाते रहना |
चादर उघाड़ देता है,
नींद में दबाकर सोना |
टॉवेल याद से सुखाना,
बरसात में भीगना मत |
गुस्सा बहुत आता है तुझे
काबू में रखना |
रात को बाम लगा लेना
फोन तो उठा लिया कर |
मन लगाकर पढ़ना
मन्दिर जाते रहना |
बेटा, जा रहा है, होस्टल
और माँ वह भी तो जा रही है,
बेटे के साथ-२|

- आलोक सेठी खंडवा
समझ
भगवान ने बनाये हैं
लोग; प्यार करने के लिए
और
वस्तुएं वापरने के लिए |
हमने समझा ...
हैं वस्तुएं प्यार करने के लिए
और
लोग वापरने के लिए |

- आलोक सेठी खंडवा
आत्म हत्या
आदमी गलत सोचते हैं ,
कि ...
वो अकेला ही मरता है
और
मौत को गले लगाकर
वो पा लेगा समस्त झंझटों से
मुक्ति...
पर वो कहाँ मरता है अकेला
उसके साथ तो
मर जाते हैं बेबस पिता
लाचार माँ, एक सुहाग,
और बेटे बेटियां भी ।
ढेर सारे सपने, त्यौहार भी
उमंग भी , उल्लास भी
धीरे-२
सारी दोस्ती, रिश्ते
और सम्बन्ध भी ...
जो उसके जीते जी
खूब चहकते थे,
खूब महकते थे ।
- आलोक सेठी खंडवा
दो जिन्दगी
पूसी नहाती है
इम्पोर्टेड शेम्पू और साबुन से
हमारी जूली को तो

खाने के नखरे ही हैं बहुत
शेरू को सिखाने आता है रोज एक ट्रेनर
जैकी को घुमाना पड़ता है
शाम को कार में
टोमी गर्मी में सो नहीं पाता
बिना कूलर के।
कैप कंपा रहा है मंगतू
ठण्ड में नहीं है स्वेटर
कडवा का बच्चा
मर गया कुपोषण से
नत्थू नहीं भर पाया
बच्चे की कोलेज की फीस
रामू के पास नहीं थे जूते
कल पाँव में काट खाया
एक सांप ने
पुलिस ने बेरहमी से पीटा
आधि रात को
फुटपाथ पर सो रहे
भिखारियों को ।
- आलोक सेठी खंडवा
कड़वे सच
एक बाइक पर तिबल सीट
और उसके बाद फुल स्पीड
टोके पुलिस तो
दादागिरी नेतागिरी का वार है
ठसके से कहेंगे ..हमें भरत से प्यार है ।
कलम से करेनेग्र कलाकारी

रेल, इमारतों में चित्रकारी
दिल-दिमाग में गंदगी का अम्बार ही अम्बार है ।
ठसके से कहेंगे ..हमें भरत से प्यार है ।
प्लास्टिक तिरंगें से सजायेंगे संस्थान
अगले दिन ही उसे दिखाएंगे कूड़ादान ।
राष्ट्र गीत पर खड़े होने को नहीं तैयार है ।
ठसके से कहेंगे ..हमें भरत से प्यार है ।
बीच सडक पर गाडी लगायेंगे
तेज हॉर्न से झांकी जमायेगे
रेलवे क्रॉसिंग खुलते ही
रेस लगाने वालों भरमार है ।
ठसके से कहेंगे ..हमें भरत से प्यार है ।
जाने अनजाने वही कहानी
ऊल जलूल ढेरों मनमानी
इन कामों से देश शर्मसार है
ठसके से कहेंगे ..हमें भरत से प्यार है ।
पहले हम सुधारें
अपना आचरण , अपना व्यवहार ...
फिर ठसके से कहें..हमें भरत से प्यार है ।
- आलोक सेठी खंडवा
अपनों से दूर
मुझ तक आने के लिए
हो रिजर्वेशन की ऊहा पोह
बदलना पड़े गाड़ियाँ
घंटों बोझिल सफर
पापा.... पापा.....
मत भेजना मुझे अपनों से इतने दूर

सूनी रह जाए मेरी
राखी और भाई दूज
तरस जाऊं अपनों के चेहरे और बोली के लिए
आ ना पाऊं आपके
दुखों को आधा और खुशियों को दोगुना करने
पापा ...मत भेजना मुझे अपनों से इतने दूर
मिठाइयाँ पीहर की,
दादी के हाथों की मठरी,
अपने कस्बे के जाम जामुन
मम्मी की चिठियाँ और ...
सखियों के हंसी ठहाके
मुझ तक आटे ही हो जाएँ हवा में गम
पापा...मत भेजना मुझे अपनों से इतने दूर
- आलोक सेठी खंडवा
- आलोक सेठी खंडवा
- आलोक सेठी खंडवा